www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ॐ

इक्कीसवीं सदी

बनाम

उज्ज्वल भविष्य

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Recd on 3/1/89

--शान्ति कुञ्ज, हरिद्वार

प्रथम बार   दिसम्बर १९८८

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org   http://literature.awgp.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

BRAHMVARCHAS SHODH SANSTHAN
SHANTIKUNJ, HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इक्कीसवीं सदी
बनाम उज्ज्वल भविष्य

वर्तमान की परिस्थितियों को देखकर ही मनुष्य भविष्य का अनुमान लगाता है। यदि समय का प्रवाह अनुपयुक्त हो, तो यही सोचते बनता है कि अगले दिन कठिनाईयों और असफलताओं से भरे होंगे। प्रसन्नता तभी होती है, जब प्रगति और सफलता की संभावना साथ जुड़ी हो। यदि दुर्दिनों का माहौल बनता दीख पड़े तो उदासी एवं निराशा छा जाना स्वाभाविक है। खिन्नता की मनः स्थिति में हाथ-पाँव फूल जाते हैं, उत्साह ठण्डा हो जाता है, नये सिरे से नया साहस जुटाने का उल्लास भी शिथिल हो जाता है।

इन दिनों आम चर्चा परिस्थितियों की विपन्नता पर होती सुनी जाती है। कुछ तो लोगों का स्वभाव ऐसा है कि आशंकाओं को बढ़ा-चढ़ाकर कहने में सहज रुचि रहती है। कुछ वास्तविकता भी ऐसी ही है, जो अगले दिनों के प्रति निराशा भरा चित्र खींचती है। उत्साह उभारने के अनेक कारण भले ही स्पष्ट दिखते हों, पर उन्हें साधारण मानने और उपेक्षा करने का स्वभाव ही प्रमुखता पाये हुए दीखता है।

चिमनियों से उगलता प्रदूषण हवा को और कारखाने का कचरा जलाशयों को दूषित करता है। ईंधन के अधिक उपयोग से अन्तरिक्ष का बढ़ता तापमान ध्रुवों के पिघलने, समुद्र में ज्वार आने का संकेत देता है। ऊँचे अन्तरिक्ष में "ओजोन" का कवच टूटने से ब्रह्माण्डीय किरणों, वायरसों के धरातल पर आ बरसने की चर्चा है। युद्धोन्माद के कारण बढ़ते जा रहे अणु-आयुधों की विभीषिका कम डरावनी नहीं। आणविक विकिरण की अभिवृद्धि सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए प्रत्यक्ष संकट है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कटते जा रहे वन–वर्षा की कमी, भू क्षरण, रेगिस्तानों की बढ़ोत्तरी, लकड़ी का अभाव, वायु शोधन में अवरोध जैसे संकटों का सृजन करते हैं। द्रुतगति से बढ़ती जनसंख्या हर क्षेत्र में अभाव उत्पन्न करती है और प्रगति कार्यक्रमों को सफल न होने देने के लिए चुनौती बनती जा रही है। नशेबाजी जिस तेजी से बढ़ रही है, उसे देखते हुए लगता है कि लोग कहीं विक्षिप्त स्तर के बन कर न रह जायें। घटती हुई जीवनी शक्ति असाध्य रोगों को जन्म दे रही है। उच्छृंखल यौनाचार में "एड्स" जैसी महामारियाँ पनप रही हैं।

चटोरेपन की आदतें शरीर को और कामुकता के दुष्परिणाम मस्तिष्क को विकृत करते चले जा रहे हैं। असंयम हर क्षेत्र में बढ़ रहा है। विलासिता और फिजूल खर्ची से आर्थिक कठिनाईयों में कमी नहीं होने पाती। मँहगाई, बेरोजगारी की दुहरी मार, बढ़ी जनसंख्या को बुरी तरह प्रभावित कर रही है। खर्चीली शादियाँ जन साधारण को दरिद्र और बेईमान बनाये दे रही हैं। कुरीतियों और अन्धविश्वासों में न जाने कितने धन, समय और साधन बर्बाद होते रहते हैं। मिलावट, नकली वस्तुओं की भरमार से हर कोई पग-पग पर ठगा जाता है। अपराधों की बाढ़ इस तेजी से आ रही है, कि इसकी चपेट में शान्ति और सुव्यवस्था पर भारी संकट लदता चला जा रहा है। पारस्परिक स्नेह सहयोग और विश्वास में कमी पड़ते जाने से समय ऐसा आता दीखता है कि अपनों की सद्भावना पर से भी विश्वास उठ जाय।

जिनके जिम्मे सुधार-परिष्कार की जिम्मेदारी है, वे अपने कर्तव्यों का वैसा पालन नहीं कर रहे, जैसा कि करना चाहिए। राजनैतिक पार्टियों की आपसी उठा पटक उनकी प्रामाणिकता कम कर रही है। सामाजिक और धार्मिक संगठन कुछ ठोस काम कर सकते थे; परन्तु वे भी भीतर से पोले-खोखले बनते चले जा रहे हैं। भ्रष्टाचार एक प्रचलन बन गया है। श्रम संगठन, उत्पादन पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

करारी चोट कर रहे हैं। आलस्य-प्रमाद, व्यसन और कुप्रचलन जनप्रवृत्ति का अंग बनते जा रहे हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय सूझ-बूझ भी विश्व शांति की बात नहीं सोचती, वरन् सुरक्षा व्यय से हर देश की कमर टूटती जा रही है। साहित्यकार, कलाकार, गायक, अभिनेता उस स्तर का सृजन नहीं कर रहे जैसा कि इस विषम वेला में सर्वतोभावेन होना चाहिए।

सामयिक कठिनाईयों में से यह कुछ की चर्चा है। इनके साथ वास्तविकता का एक बड़ा अंश भी जुड़ा हुआ है। प्रायः चर्चा भी इन्हीं की होती है, अखबार भी इन्हीं से रंगे मिलते हैं। प्रतिपादनकर्त्ता अगले दिनों की विभीषिकाओं का प्रस्तुतीकरण इस प्रकार करते हैं जिससे वर्तमान की अवांछनीयताएँ और भविष्य की अशुभ संभावनाएँ ही उभर कर सामने आती हैं। ऐसी दशा में निराशा का वातावरण बनना स्वाभाविक है।

निराश मनःस्थिति अपने आप में एक ऐसा संकट है, जिसके रहते व्यक्ति समर्थ होते हुए भी, उज्ज्वल भविष्य की संरचना हेतु सहायता कर पाने में स्वयं को अक्षम पाता है। डरावने भविष्य की कल्पना भर से मनोबल टूटता है, उत्साह और उल्लास में भारी कमी पड़ती है और अभिनव सृजन के लिए जिस साहस की आवश्यकता है, उसे जुटाना भारी दीख पड़ रहा है।

सृजन प्रयासों का क्रम सर्वथा बन्द हो गया हो, सो बात भी नहीं। वर्तमान को सुधारने और भविष्य को उज्ज्वल बनाने हेतु जिन प्रयत्नों की आवश्यकता है, उनमें शिथिलता भले ही हो, पर अभाव उनका भी नहीं है। इतने पर भी प्रस्तुत माहौल ऐसा है जिसे द्रुतगामी प्रयासों के लिए जन साधारण का उल्लास उभारने के लिए अपर्याप्त ही कहा जा सकता है। मानवी स्वभाव ही है, जो अशुभ को बढ़ा चढ़ाकर डरावने रूप में एवं सृजन की दिशा में नियोजित प्रयत्नशीलता को हलका आँकता है। उत्साह के अभाव

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के ऐसे वातावरण में प्रगति प्रयासों को अभीष्ट बल मिलता नहीं। पराक्रम शिथिल रहे तो भविष्य की संरचना के लिए जिन प्रचण्ड प्रयासों की आवश्यकता है, उसमें कमी और सुखद संभावनाएँ बन पड़ने की गति धीमी ही बनी रही है।

हौसले बुलन्द हों, तो कठिनाईयों के बीच भी व्यक्ति मिल जुलकर थोड़े ही समय में उतना कुछ कर सकते हैं जिसे देखकर आश्चर्यचकित रहा जा सके। पनामा की नहर, स्वेज कैनाल, चीन की दीवार, मिस्र के पिरामिड जैसे अनेकों प्रबल प्रयास, उज्ज्वल साहस भरे वातावरण मे ही सम्पन्न हुए हैं। बड़ा वजन जब श्रमिक मिल जुलकर आगे धकेलते हैं तो उनकी "हेईशा" जैसी जोरदार हुंकार जादुई असर दिखाती है। युद्ध के बाजे सैनिकों में नया जोश भर देते हैं और वे दूने उत्साह से मोर्चा संभालते हैं।

इतिहास का एक पृष्ठ खोलकर देखा जाय, जिन दिनों इग्लैण्ड पर जर्मनी की लगातार बम बारी हो रही थी, तब वह देश बुरी तरह तहस-नहस हो गया था, आशा की कोई किरण नहीं दीख पड़ रही थी। उन दिनों तत्कालीन ब्रिटिश प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल ने एक नया नारा दिया "वी" फॉर विक्ट्री। विजय के सुनिश्चित विश्वास के प्रतीक "वी" अक्षर को ऊँगलियों के इशारे से. दीवार-दीवार पर, वाहनों पर, पुस्तकों पर हर कहीं अंकित कर दिया गया। उस संकेत सूत्र का अर्थ समझाया गया "विजय"। अन्ततः जीतना अपने को ही है चाहे समय कितना ही प्रतिकूल व विषम क्यों न हो। इस हुंकार का जादुई प्रभाव पड़ा। बाल वृद्ध सभी अपने अपने स्तर के सृजन कार्यों में जुट गये। फलतः न केवल पराजय विजय में बदली, अपितु युद्ध से बिस्मार उस देश व यूरोप के अन्य साथी राष्ट्रों को नये सिरे से, पहले से भी अधिक शानदार बनाकर खड़ा कर दिया गया।

दार्शनिक, मनुष्य को "भटका हुआ देवता" मानते हैं और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कहते हैं कि यदि वह अपनी शक्ति को पहचान ले, उसे सत्प्रयोजनों में नियोजित करे, तो नेपोलियन ही नहीं, हर कोई अपने क्षेत्र में अपने कौशल को सर्व समर्थ बना सकता है। फिर असंभव कुछ रहे ही नहीं।

जामवन्त के उद्बोधन से हनुमान को शक्तिबोध हुआ और वे समुद्र लाँघने, पर्वत उखाड़ने में सफल हो गये। कृष्ण के उद्बोधन पर अर्जुन ने गाण्डीव उठाया और थोड़े साधन रहते हुए भी महाभारत जीत दिखाया। चाणक्य, समर्थ रामदास और रामकृष्ण परमहंस ने भी अपने शिष्यों में प्रेरणा भर के उन्हें चक्रवर्ती चन्द्रगुप्त, छत्रपति शिवाजी और भारतीय संस्कृति के अग्रदूत विवेकानन्द के रूप में, ऐसा कुछ कर दिखाने में समर्थ बनाया जिसे कभी विस्मरण नहीं किया जा सकता। बुद्ध का धर्म चक्र प्रवर्तन प्रसिद्ध है। उनके एकाकी अग्रगमन ने लाखों धर्म प्रचारकों को विश्व के भावनात्मक काया कल्प में जुटाया था। गाँधी के उद्बोधन पर सोया भारत जाग पड़ा और लम्बी गुलामी से मुक्ति पाकर रहा। "करो या मरो" के नारे ने जन-जन का खून खौलाया और अदम्य साहस प्रदान किया।

टूटे हुए जापान, रूस, चीन, जर्मनी आदि को, वहाँ के नव सृजेताओं द्वारा साथियों में भरे गए उत्साह ने ही उठाया और जमीन से आसमान तक उछाल कर दिखाया। आज की घड़ी में समस्त विश्व के लिए, विशेषतया भारत वर्ष के नवीन अभ्युदय के लिए "इक्कीसवीं सदी बनाम उज्ज्वल भविष्य" का नारा सर्वथा उपयुक्त एवं तथ्य पूर्ण है। इक्कीसवीं सदी के संबंध में भविष्य वक्ताओं मनीषियों, दिव्यदर्शी एवं आकलनकर्ताओं ने बहुत कुछ कहा है और बताया है कि अँधेरे के समापन एवं अभिनव प्रभात पर्व के अरुणोदय का यही सबसे उपयुक्त अवसर है। इन दिनों सृजेता की ऐसी दिव्य प्रेरणा का अवतरण होगा, जो जन-जन के मन-मन में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निराशा जन्य अशक्ति को दूर करेगी और ऐसा उल्लास उमगायेगी, कि उसके प्रभाव से हर किसी में उज्ज्वल भविष्य की संरचना में बढ़-चढ़ कर काम करने का उत्साह उभरेगा। साहस और पराक्रम के सहारे बड़े से बड़े कार्य सम्पन्न होकर रहे हैं। विश्व में दर्जनों क्रान्तियाँ सम्पन्न हुई, राजतंत्र का स्थान प्रजातंत्र ने ग्रहण किया, दास प्रथा मिटी, सामन्ती जमींदारी सत्ता किसानों के चरणों में आ गिरी, तो अब परिवर्तन क्यों संभव नहीं ?

इसे एक संयोग या तथ्य ही कहना चाहिए कि इक्कीसवीं सदी के नवयुग के आगमन, नवसृजन और सर्वतोमुखी अभ्युदय की भविष्य वाणियाँ किन्हीं ज्योतिषियों पण्डितों ने नहीं, वरन् ऐसे लोगों ने की है, जिन्हें अपने-अपने क्षेत्र में अतीव प्रामाणिक माना जाता रहा है। फिर समय की माँग और परिवर्तन प्रक्रिया का सूक्ष्म अवलोकन करने से भी आभास मिलता है कि कठिनाईयों और विसंगतियों के दुर्दिन कट गए और अगला समय ऐसा आने वाला है, जिससे परिवर्तित प्रवाह में असाधारण अशुभ संकट भरी संभावनाओं से लोक मानस को मुक्ति मिलेगी और ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न होंगी, जो नये युग की नयी सम्भावनाओं का अवतरण-उद्भव करती चली जायें।

यह कार्य जनमानस के परिष्कार द्वारा संपन्न होगा। इसी का दूसरा नाम विचार क्रान्ति दिया गया है। लोगों को अभ्यस्त अशुभ चिन्तन से विरत होना पड़ेगा और ऐसी अन्तःस्फुरणा से प्रेरित होना पड़ेगा जो दूरदर्शी विवेकशीलता अपनाने के लिए जन-जन को बाधित करे। यह स्फुरणा क्रिया-कलापों, प्रचलनों एवं प्रयासों में ऐसे तत्वों का समावेश करेगी, जिसके आधार पर हर क्षेत्र में औचित्य अपनाया जाता दृष्टिगोचर होने लगे। मनः स्थिति ही परिस्थितियों को जन्म देती है। यदि नये युग के अनुरूप विचारधारा को स्वीकार करने और औचित्य को कार्यान्वित करने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

के लिए उत्साह उमड़ पड़े, तो कोई कारण नहीं कि सुखद परिस्थितियों का प्रादुर्भाव संभव न हो सके।

आवश्यकता इस बात की है कि वर्तमान की विसंगतियों को बदलने और सुखद संभावनाओं के बन पड़ने की बात को एक सुनिश्चित संभावना की तरह लोक मानस में प्रतिष्ठित किया जाय। नव सृजन की रूप रेखा जन-जन के सम्मुख प्रस्तुत की जाय और प्रतिभाओं के अग्रगमन से ऐसा माहौल बनाया जाय कि उसी राजमार्ग पर चल पड़ने की उत्कट अभिलाषा सर्व साधारण में जग पड़े।

दृष्टिगोचर हो रही अनेक अशुभ संभावनाएँ, अचिन्त्य चिन्तन और अवाँछनीय गतिविधियाँ अपनाने से उत्पन्न हुई हैं। यदि इस प्रवाह को बदला जा सके तो उलटे को उलट देने पर सीधा बन जाने की उक्ति सुनिश्चित रूप से चरितार्थ होती दृष्टिगोचर होगी।

नवयुग का शुभारम्भ **"इक्कीसवीं सदी बनाम उज्ज्वल भविष्य"** के नारे से किया जाना चाहिए। धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक आन्दोलनों के अपने-अपने नारे होते हैं। समय की आवश्यकता यही है कि सतयुग की वापसी पर विश्वास किया जाय और नव सृजन के सर्वतोमुखी प्रयोजन में जुट पड़ने के लिए सर्वसाधारण को कटिबद्ध किया जाय। इस महान आन्दोलन का प्राणवान उद्घोष यही होना चाहिए। यह नारा सर्वत्र अंकित एवं मुखरित होने लगे, इस प्रयास में हमें इन्हीं दिनों एक जुट हो कर प्रवृत्त हो जाना चाहिए।

मुद्रक:—युगान्तर चेतना प्रेस, शान्ति कुञ्ज हरिद्वार।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org